[हमारे अतीत भाग -3कक्षा -8] 4 आदिवासी, दिकू और एक स्वर्ण युग की कल्पना

1. रिक्त स्थान भरें

(क) अंग्रेजों ने आदिवासियों को ..... के रूप में वर्णित किया।

(ख) झूम खेती में बीज बोने के तरीके को ..... कहा जाता है।

(ग) मध्य भारत में ब्रिटिश भूमि बंदोबस्त के अंतर्गत आदिवासी मुखियाओं को ..... स्वामित्व मिल गया।

(घ) असम के ..... और बिहार की ..... में काम करने के लिए आदिवासी जाने लगे।

उत्तर: (क) जंगली और बर्बर (ख) बिखेरना (ग) भूमि का। (घ) चाय बागानों कोयला खानों।

2. सही या गलत बताएँ :

(क) झूम कास्तकार जमीन की जुताई करते हैं और बीज रोपते हैं। उत्तर:गलत

(ख) व्यापारी संथालों से कृमिकोष खरीदकर उसे पाँच गुना ज्यादा कीमत पर बेचते थे। उत्तर:सही

(ग) बिरसा ने अपने अनुयायियों का आह्वान किया कि वे अपना शुद्धिकरण करे, शराब पीना छोड़ दें और डायन व जादू-टोने जैसी प्रथाओं में यकीन न करें। उत्तर:सही

(घ) अंग्रेज आदिवासियों की जीवन पद्धति को बचाए रखना चाहते थे। उत्तर:गलत

3. ब्रिटिश शासन में घुमंतू काश्तकारों के सामने कौन सी समस्याएँ थीं

उत्तर घुमंत काश्तकारों के सामने समस्याएँ

1. अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिए घुमंतू कास्तकारों को एक जगह रहने पर मजबूर कर दिया था। इससे घुमंतू काश्तकारों की स्वतंत्रता भंग हो रही थी।

2. झूम खेती पर रोक लगा दी।

3. घुमंतू काश्तकार जो ब्रिटिश मॉडल के अनुसार हल-बैल के प्रयोग द्वारा खेती करते थे जिससे उन्हें कठिनाई होती थी, क्योंकि उन्हें खेती से अच्छी पैदावार नहीं मिल रही है जिससे उन्हें लगान चुकाना मुश्किल हो रहा था।

4. औपनिवेशिक शासन के तहत आदिवासी मुखियाओं की ताकत में क्या बदलाव आए

उत्तर आदिवासी मुखियाओं की ताकत में बदलाव:

1. आदिवासी मुखियाओं के कई प्रशासनिक अधिकार खत्म हो गए। उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करने के लिए मजबूर किया गया।

2. आदिवासी मुखियाओं को अब अंग्रेज अधिकारियों को नजराना देना पड़ता था और अंग्रेजों के प्रतिनिधि के रूप में अपने समूहों को अनुशासन में रखना होता था।

3. आदिवासी मुखियाओं के पास जो ताकत पहले थी अब वह ताकत नहीं रही।

5. दीकुओं से आदिवासियों के गुस्से के क्या कारण थे

उत्तर दीकु --आदिवासी मिशनरी, सूदखोर, हिन्दू जमींदार तथा अंग्रेज अधिकारियों को दीकु कहते है।

दीकुओं से आदिवासियों के गुस्से के कारण:

1. आदिवासी दीकुओं को अपनी गरीबी तथा दयनीय अवस्था का कारण मानते थे।

2. आदिवासियों का मानना था कि कम्पनी की भू राजस्व नीति, उनकी पारंपरिक भूमि व्यवस्था को नष्ट कर रही थी।

3. आदिवासियों का मानना था कि हिन्दू जमींदार तथा सूदखोर उनकी जमीन हडपते जा रहे है।

4. उनका यह भी मानना था कि मिशनरी उनके धर्म तथा पारंपरिक संस्कृति की आलोचना करते। है।

6. बिरसा की कल्पना में स्वर्ण युग किस तरह का थाआपकी राय में यह कल्पना लोगों को इतनी आकर्षक क्यों लग रही थी

उत्तर बिरसा की नजर स्वर्ण युग

1. बिरसा ने अपने अनुयायियों से अपने गौरवपूर्ण अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए संकल्प लेने का आह्वान किया

2. बिस्सा ऐसे स्वर्ण युग की चर्चा करते थे जब मुंडा लोग अच्छा जीवन जीते थे तटबंध बनाते थे, कुदरती झरनों को नियंत्रित करते थे, पेड और बाग लगते थे, पेट पालने के लिए खेती करते थे।

3. उस काल्पनिक युग में मुंडा अपने भाइयों और रिश्तेदारों का खून नहीं बहाते थे वे ईमानदारी से जीते थे।

4. बिरसा चाहते थे कि लोग एक बार फिर अपनी जीमन पर खेती करे, एक जगह स्थायी रूप से रहें और अपने खेतों में काम करे।

Notes prepared by Lekhram Chaudhary & Tejpal Sharma [Team GUPS 7DPN – Bhadra]

डाउनलोड करें दुसरे विषयों के नोट्स पीडीएफ़ में Click Here